Samvid Multidisciplinary Research Journal
Where researchers meet their destiny...
ISSN 2582-015X

रामकथा आधारित आधुनिक हिन्दी खण्डकाव्य में 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की अवधारणा : साहित्यिक एवं भाषायी परिप्रेक्ष्य

पंड्या किंजल डी

पीएचडी शोधार्थिनी (हिन्दी विभाग)

हेमचंद्राचार्य उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय पाटण, गुजरात

नम्बर:7228801385 मेल : pandyakinjal212@gmail.com

प्रस्तावना

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की संकल्पना भारतीय राष्ट्र-चेतना का वह आधार है, जो विविधताओं में निहित एकता को रेखांकित करती है। भारतीय समाज सांस्कृतिक, भाषाई , भौगोलिक और धार्मिक धार्मिक दृष्टि से बहुरंगी होते हुए भी एक साझा सांस्कृतिक चेतना से जुड़ा हुआ है। भारतीय साहित्य, विशेषतः रामकथा परंपरा, इस एकता-बोध की सशक्त अभिव्यक्ति प्रस्तुत करती है। रामकथा न केवल एक धार्मिक आख्यान है, बल्कि भारतीय जीवन-दर्शन, मानवीय मूल्यों और सामाजिक समरसता का व्यापक प्रतिफलन भी है।

आधुनिक हिन्दी खण्डकाव्य में रामकथा के विभिन्न प्रसंगों को समकालीन संवेदना के साथ पुनः रचा गया है, जिससे 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की अवधारणा साहित्यिक रूप में सुदृढ़ होती है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य रामकथा आधारित आधुनिक हिन्दी खण्डकाव्य के माध्यम से साहित्यिक एवं भाषायी परिप्रेक्ष्य में 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की अवधारणा का विश्लेषण करना है।

भारतीय साहित्य में रामकथा वह केन्द्रीय धुरी है, जिसके चारों ओर भारतीय जीवन-दर्शन, नैतिक मूल्य और सामाजिक चेतना विकसित हुई है। रामकथा केवल एक धार्मिक आख्यान नहीं है, बल्कि भारतीय समाज की सामूहिक स्मृति और सांस्कृतिक चेतना का प्रतिनिधित्व करती है। उत्तर भारत की अवधी-परम्परा से लेकर दक्षिण भारत की तमिल, तेलुगु और कन्नड़

परम्पराओं तक रामकथा की उपस्थिति यह सिद्ध करती है कि यह कथा सम्पूर्ण भारत को जोड़ने वाली सांस्कृतिक कड़ी है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में खण्डकाव्य विधा के अंतर्गत रामकथा के विविध प्रसंगों को नए दृष्टिकोण, आधुनिक संवेदना और सामाजिक चेतना के साथ प्रस्तुत किया गया है। सीमित कथावस्तु में व्यापक जीवन-सत्य को व्यक्त करने की क्षमता के कारण खण्डकाव्य आधुनिक युग की एक सशक्त साहित्यिक विधा के रूप में प्रतिष्ठित हुआ है। प्रस्तुत शोध-पत्र में रामकथा आधारित आधुनिक हिन्दी खण्डकाव्यों के माध्यम से 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की अवधारणा का साहित्यिक एवं भाषायी विश्लेषण किया गया है।

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' : साहित्यिक अवधारणा

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' का मूल भाव 'विविधता में एकता' है। यह अवधारणा भारतीय दर्शन में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के रूप में प्राचीन काल से विद्यमान रही है। साहित्य इस विचारधारा को जनमानस तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम रहा है। रामकथा में सामाजिक वर्गों, वर्णों, जातियों और क्षेत्रों के बीच समन्वय का जो स्वरूप मिलता है, वह राष्ट्रीय एकता का साहित्यिक आदर्श प्रस्तुत करता है।

नारी चेतना और सांस्कृतिक एकता

आधुनिक हिन्दी खण्डकाव्यों में नारी पात्रों को विशेष गरिमा प्रदान की गई है। शबरी, स्वयंप्रभा, सीता और भूमिजा जैसे पात्र नारी चेतना, धैर्य, त्याग और आत्मबल के प्रतीक हैं।

मैथिलीशरण गुप्त के काव्यों में नारी को सांस्कृतिक आदर्श और नैतिक शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। नारी पात्रों की यह सशक्त प्रस्तुति भारतीय समाज में स्त्री-पुरुष समानता और मानवीय गरिमा की स्थापना करती है। इस प्रकार नारी चेतना 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की अवधारणा को मानवीय और सांस्कृतिक आधार प्रदान करती है।

रामकथा की भाषायी परंपरा

रामकथा की विशेषता इसकी बहुभाषिक परंपरा है। संस्कृत की वाल्मीकि रामायण से लेकर अवधी की रामचरितमानस, ब्रज और आधुनिक हिन्दी साहित्य तक रामकथा निरंतर विकसित होती रही है। विभिन्न भाषाओं में रचित रामकथा ने भाषायी विविधता को बाधा नहीं, बल्कि

सांस्कृतिक सेतु के रूप में स्थापित किया है। यह भाषायी प्रवाह 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की अवधारणा को मजबूत आधार प्रदान करता है।

आधुनिक हिन्दी खण्डकाव्य में रामकथा

आधुनिक हिन्दी खण्डकाव्य में रामकथा को परंपरा और आधुनिकता के समन्वय के साथ प्रस्तुत किया गया है। खण्डकाव्यकारों ने राम, सीता, हनुमान , शबरी जैसे पात्रों को मानवीय संवेदना, करुणा, नैतिक मूल्यों और सामाजिक समरसता के प्रतीक रूप में चित्रित किया है। इन काव्यों में रामकथा केवल धार्मिक आख्यान न होकर सामाजिक चेतना का माध्यम बन जाती है।

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की अभिव्यक्ति : चयनित प्रसंग

शबरी प्रसंग सामाजिक समावेशन और समरसता का श्रेष्ठ उदाहरण है। राम का निषादराज से संवाद वर्ग-सामंजस्य को दर्शाता है। हनुमान का चरित्र सेवा, राष्ट्रभाव और निष्ठा का प्रतीक है। ये सभी प्रसंग आधुनिक हिन्दी खण्डकाव्य में 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की भावना को सशक्त करते हैं।

साहित्यिक एवं भाषायी समन्वय

रामकथा आधारित आधुनिक हिन्दी खण्डकाव्य में साहित्य और भाषा का समन्वय स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। भाषा भावों की संवाहिका बनकर राष्ट्रीय चेतना को अभिव्यक्त करती है। क्षेत्रीयता से ऊपर उठकर ये काव्य अखिल भारतीय सांस्कृतिक पहचान का निर्माण करते हैं।

भाषायी परिप्रेक्ष्य और सांस्कृतिक समन्वय

रामकथा आधारित आधुनिक हिन्दी खण्डकाव्यों की भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और भावप्रधान है। इनमें तत्सम, लोकभाषा और तद्भव के शब्दों का संतुलित प्रयोग मिलता है, जिससे ये काव्य देश के विभिन्न क्षेत्रों के पाठकों से सहज संवाद स्थापित करते हैं।

प्रतीक, बिम्ब और अलंकारों के माध्यम से कवियों ने भारतीय संस्कृति की विविधता को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास किया है। चित्रकूट, पंचवटी और अशोकवाटिका का काव्यात्मक चित्रण भाषायी सौन्दर्य के साथ सांस्कृतिक एकता का बोध भी कराता है। यह भाषायी समन्वय 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की भावना को साहित्यिक स्तर पर साकार करता है।

Samvid Multidisciplinary Research Journal
Where researchers meet their destiny...
ISSN 2582-015X

रामकथा और राष्ट्रीय एकात्मता

रामकथा आधारित खण्डकाव्य यह सिद्ध करते हैं कि भारतीय राष्ट्रीय एकता किसी बाह्य शक्ति का परिणाम नहीं, बल्कि सांस्कृतिक चेतना की देन है। रामकथा में निहित धर्म, सत्य,, करुणा और त्याग जैसे मूल्य सम्पूर्ण भारत को एक साझा जीवन-दृष्टि प्रदान करते हैं। यही जीवन-दृष्टि 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की आधारभूमि है।

रामकथा : अखिल भारतीय सांस्कृतिक परम्परा

रामकथा भारतीय सांस्कृतिक परम्परा की वह धारा है, जिसने देश के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों को सांस्कृतिक रूप से एक सूत्र में बाँधने का कार्य किया है। अयोध्या, चित्रकूट, पंचवटी, लंका, दण्डकारण्य और किष्किन्धा जैसे स्थल केवल कथा-स्थल नहीं हैं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक स्मृति के प्रतीक बन चुके हैं। इन स्थलों का उल्लेख भारतीय जनमानस को यह अनुभूति कराता है कि भारत की सांस्कृतिक चेतना किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं है।

रामकथा में निहित जीवन-मूल्य–मर्यादा, करुणा, त्याग, कर्तव्य और सामाजिक समरसता– भारतीय समाज को एक साझा नैतिक आधार प्रदान करते हैं। यही साझा नैतिकता 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की अवधारणा का मूल है। रामकथा के माध्यम से भारतीय समाज ने सदैव यह सीखा है कि विविधता के बावजूद मानवीय मूल्य समान रहते हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि रामकथा आधारित आधुनिक हिन्दी खण्डकाव्य 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की अवधारणा को साहित्यिक एवं भाषायी स्तर पर प्रभावी रूप में प्रस्तुत करते हैं। ये काव्य न केवल साहित्यिक मूल्य रखते हैं, बल्कि राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक समन्वय और मानवीय मूल्यों के संवाहक भी हैं। इस प्रकार भारतीय साहित्य 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की भावना को सुदृढ़ करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

संदर्भ ग्रंथ

शबरी ,नरेश मेहता ,लोक भारती प्रकाशन, संस्करण:2016

पंचवटी , मैथलीशरण गुप्त, हिंदुस्तानी एकेडेमी, संस्करण : 1993

साहित्य और संस्कृति की भूमिका ,राणा प्रताप,पुस्तक भवन ,2009

शम्बूक डॉ जगदीश गुप्त , भारती प्रकाशन ,2013